Library D.El.ED

बिहार डी.एल.एड. पाठ्यचर्या की रूपरेखा

दो वर्षीय डी.एल.एड. (फेस-टू-फेस) पाठ्यचर्या पाठ्यक्रम की रूपरेखा

नि:शुल्क वितरण हेतु

SHRI VINOD PUSTAK MANDIR
Corporate Office : Plot No. 4, Mauja Kakretha,
Near Foot On Shoes, Sikandra, Agra
Sales Office : Dr. Rangeya Raghava Marg, Agra-2
Ph. : (0562) 2855187, 2855179
Mob. : 8449751133, 9719460187
Fax : 0562-2524532
E-mail : rsainternational@rediffmail.com,
shrivinodpustakmandir@gmail.com
Website : www.vinodpustakmandir.in

प्रथम वर्ष

	विषय		मूल्यांकन				
		प्रथम वर्ष	Credit	बाह्य	आन्तरिक	कुल अंक	
1	F-1	समाज, शिक्षा और पाठ्यचर्या की समझ	4	70	30	100	S.K
2	F-2	बचपन और बाल विकास	4	70	30	100	Shweta
3	F-3	प्रारम्भिक बाल्यावस्था देखभाल एवं शिक्षा	4	70	30	100	Shweta
4	F-4	विद्यालय संस्कृति, परिवर्तन और शिक्षक विकास	4	70	30	100	SK
5	F-5	भाषा की समझ तथा आरम्भिक भाषा विकास	2	35	15	50	R.Kr
6	F-6	शिक्षा में जेण्डर एवं समावेशी परिप्रेक्ष्य	2	35	15	50	Shweta
7	F-7	गणित का शिक्षण-शास्त्र-1 (प्राथमिक स्तर)	2	35	15	50	R.Kr
8	F-8	हिन्दी का शिक्षण-शास्त्र-1 (प्राथमिक स्तर)	2	35	15	50	SP
9	F-9	Proficiency in English	2	35	15	50	SP
10	F-10	पर्यावरण अध्ययन का शिक्षणशास्त्र	2	35	15	50	SP
11	F-11	कला समेकित शिक्षा	4	40	60	100	R.Kr
12	F-12	शिक्षा में सूचना एवं संचार तकनीकी	4	40	60	100	Shweta
~~13~~	SEP-1	विद्यालय अनुभव कार्यक्रम-1 (4 सप्ताह) Internship.	4	40	60	100	
			40	570	430	1000	

समाज, शिक्षा और पाठ्यचर्या की समझ

पूर्णांक : 100 (70 + 30) **F-1** **अध्ययन अवधि : 80 घण्टा**

इकाई 1 : बच्चे, बचपन और समाज

- 'बच्चे तथा बचपन : सामाजिक, सांस्कृतिक तथा ऐतिहासिक समझ।
- समाजीकरण की समझ : अवधारणा, कारक तथा विविध सन्दर्भ।
- बच्चों का समाजीकरण : माता-पिता, परिवार, पड़ोस, जेण्डर एवं समुदाय की भूमिका।
- बाल अधिकारों का सन्दर्भ : उपेक्षित वर्गों से आने वाले बच्चों पर विशेष चर्चा के साथ।

इकाई 2 : विद्यालय और समाजीकरण

- शिक्षा, विद्यालय और समाज : अन्तर्सम्बन्धों की समझ।
- विद्यालय में समाजीकरण की प्रक्रिया : विभिन्न कारकों की भूमिका व प्रभावों की समझ।
- शिक्षा, शिक्षण तथा विद्यालय : सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक व राजनैतिक आधार।

इकाई 3 : शिक्षा और ज्ञान : विविध परिप्रेक्ष्य की समझ

- शिक्षा : सामान्य अवधारणा, उद्देश्य एवं विद्यालयी शिक्षा की प्रकृति।
- शिक्षा को समझने के विभिन्न आधार/दृष्टिकोण : दर्शनशास्त्रीय, मनोवैज्ञानिक, समाजशास्त्रीय शिक्ष का साहित्य, शिक्षा का इतिहास आदि।
- ज्ञान की अवधारणा : दार्शनिक परिप्रेक्ष्य।
- ज्ञान के विविध स्वरूप एवं अर्जन के तरीके।

इकाई 4 : प्रमुख चिन्तकों के मौलिक लेखन की शिक्षाशास्त्रीय समझ

- महात्मा गाँधी—हिन्द स्वराज : सामाजिक दर्शन और शिक्षा के सम्बन्ध को रेखांकित करते हुए।
- गिजुभाई बधेका—दिवास्वप्न : शिक्षा में प्रयोग के विचार को रेखांकित करते हुए।
- रवीन्द्रनाथ टैगोर—शिक्षा : सीखने में स्वतन्त्रता एवं स्वायत्तता की भूमिका को रेखांकित करते हुए।
- मारिया माण्टेसरी—ग्रहणशील मन पुस्तक से 'विकास के क्रम' शीर्षक अध्याय : बच्चों के सीखने के सम्बन्ध में विशेष पद्धति को रेखांकित करते हुए।
- ज्योतिबा फुले—हण्टर आयोग (1882) को दिया गया बयान : शैक्षिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक असमानता को रेखांकित करते हुए।
- डॉ. जाकिर हुसैन—शैक्षिक लेख : बालकेन्द्रित शिक्षा के महत्त्व को रेखांकित करते हुए।
- जे. कृष्णमूर्ति—'शिक्षा क्या है' : सीखने-सिखाने में संवाद की भूमिका को रेखांकित करतेहुए।
- जॉन डीवी—शिक्षा और लोकतन्त्र से 'जीवन की आवश्यकता के रूप में शिक्षा' शीर्षक लेख : शिक्षा और समाज की अन्तर्क्रिया को रेखांकित करते हुए।

इकाई 5 : पाठ्यचर्या की समझ : बच्चों तथा समाज के सन्दर्भ में

- पाठ्यचर्या तथा पाठ्यक्रम : अवधारणा तथा विविध आधार।
- बच्चों की पाठ्य-पुस्तकें : शिक्षा, ज्ञान एवं समाजीकरण के माध्यम के तौर पर।
- स्थानीय पाठ्यचर्या की समझ।

पाठ्य-पुस्तक

BR001 समाज, शिक्षा और पाठ्यचर्या की समझ —नेत्रा रावणकर

बचपन और बाल विकास

पूर्णांक : 100 (70 + 30)

F-2

अध्ययन अवधि : 80 घण्टा

इकाई 1 : बचपन व बाल विकास की समझ

- बच्चे तथा बचपन : मनो-सामाजिक अवधारणा।
- बचपन को प्रभावित करने वाले मनोसामाजिक कारक।
- बाल विकास : अवधारणा, विकास के विविध आयाम, प्रभावित करने वाले कारक।
- वृद्धि एवं विकास : अन्तर्सम्बन्धों की समझ, अध्ययन के तरीके।

इकाई 2 : बच्चों का शारीरिक एवं मनोगत्यात्मक विकास

- शारीरिक विकास की समझ।
- मनोगत्यात्मक विकास की समझ।
- बच्चों के शारीरिक एवं मनोगत्यात्मक विकास की समझ।

इकाई 3 : बच्चों में सृजनात्मकता

- सृजनात्मकता : अवधारणा, बच्चों के सन्दर्भ में विशेष महत्व।
- बच्चों में सृजनात्मक विकास हेतु विविध तरीके।
- सृजनात्मकता : प्रभावित करने वाले कारक।

इकाई 4 : खेल और बाल विकास

- खेल से आशय : अवधारणा, विशेषता, बच्चों के विकास के सन्दर्भ में महत्व।
- बच्चों के खेल : विविध प्रकार एवं सन्दर्भ।
- बच्चों के विविध खेल : सीखने-सिखाने के माध्यम के रूप में।

इकाई 5 : बच्चे और व्यक्तित्व विकास

- व्यक्तित्व विकास के विविध आयाम : एरिक्सन के सिद्धान्त का विशेष सन्दर्भ।
- बच्चों में भावात्मक/संवेगात्मक विकास का पहलू : जॉन बाल्बी का सिद्धान्त एवं अन्य विचार।
- नैतिक विकास और बच्चे : सही-गलत की अवधारणा, ज्यां पियाजे तथा कोहलबर्ग का सिद्धान्त।

पाठ्य-पुस्तक

BR002 बचपन और बाल विकास —डॉ. लाजवन्ती पटेल

प्रारम्भिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा

पूर्णांक : 100 (70 + 30) **F-3** **अध्ययन अवधि : 80 घण्टा**

इकाई 1 : 'प्रारम्भिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा' की समझ

- प्रारम्भिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा : प्रमुख अवधारणाएँ।
- ईसीसीई की आवश्यकता एवं उद्देश्य।
- प्रारम्भिक वर्षों के दौरान गुणवत्तापूर्ण प्रारम्भिक बाल्यावस्था देखभाल शिक्षा का बच्चे के विकास एवं जीवन पर प्रभाव।
- बच्चे कैसे सीखते हैं : बाल विकास की अवस्थाएँ (0-3, 3-6, 6-8 वर्ष), उप-अवस्थाएँ एवं सीखना।

इकाई 2 : प्रारम्भिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा (ईसीसीई) के पाठ्यचर्या की समझ

- एक सन्तुलित तथा सन्दर्भयुक्त ईसीसीई पाठ्यचर्या की समझ।
- ईसीसीई पाठ्यचर्या के लघु एवं दीर्घकालिक उद्देश्य तथा नियोजन।
- गतिविधियों के आयोजन के लिए विभिन्न विधियों/प्रक्रियाओं का चयन (उदाहरण—विषयवस्तु आधारित प्रक्रिया, प्रोजेक्ट विधि आदि)।
- कक्षा में विकासोनुकूल, बाल-केन्द्रित तथा समावेशी वातावरण निर्माण।

इकाई 3 : प्रारम्भिक बाल्यावस्था शिक्षा एवं विद्यालय की तैयारी

- प्राथमिक विद्यालयों में प्रारम्भिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा के विस्तार का अर्थ एवं आधार।
- प्रारम्भिक वर्षों में प्रक्रियाओं के बाल केन्द्रित होने का अर्थ।
- प्रारम्भिक बाल्यावस्था शिक्षा में खेल एवं गतिविधियों के आयोजन का महत्व।
- विद्यालय आने से पहले बच्चों की भाषा तथा गणितीय कौशल।

इकाई 4 : बच्चे की प्रगति का आकलन

- प्रारम्भिक वर्षों में विकास के विभिन्न आयाम एवं अधिगम।
- बच्चे की प्रगति के विभिन्न संकेतक एवं मानक।
- बच्चे की प्रगति का अवलोकन व आंकलन।
- प्रारम्भिक बाल्यावस्था शिक्षा में बच्चे की प्रगति से सम्बन्धित अभिलेखों का संधारण।
- बच्चे की प्रगति में घर एवं विद्यालय की भूमिकाओं का अन्तर्संबंध।
- विशेष आवश्यकता वाले (दिव्यांग) बच्चे तथा प्रारम्भिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा।

इकाई 5 : बिहार में प्रारम्भिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा

- बिहार में प्रारम्भिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा की वर्तमान स्थिति।
- राज्य में प्रारम्भिक बाल्यावस्था शिक्षा को 8 वर्ष तक विस्तार देने का अर्थ।
- राज्य में प्रारम्भिक बाल्यावस्था शिक्षा की चुनौतियाँ एवं नवाचार।
- राज्य में विद्यालय की तैयारी में संस्थाओं (अकादमिक एवं सामाजिक) से अपेक्षा।

पाठ्य-पुस्तक

BR003 प्रारम्भिक बाल्यावस्था, देखभाल और शिक्षा —डॉ. सविता सक्सैना

विद्यालय संस्कृति, परिवर्तन और शिक्षक विकास

पूर्णांक : 100 (70 + 30) **F-4** **अध्ययन अवधि : 80 घण्टा**

इकाई 1 : विद्यालय संस्कृति और प्रबन्धन

- विद्यालय संस्कृति के संगठनात्मक पहलू : अवधारणा, संरचना एवं घटकों की आलोचनात्मक समझ।
- विद्यालय प्रबन्धन की व्यवस्था और अन्तर्निहित मान्यताएँ : विभिन्न घटक, कार्य संस्कृति, अनुशासन, समय प्रबन्धन, आपदा प्रबन्धन, बाल संसद व मीना मंच की भूमिका।
- विद्यालय के प्रबन्धन से सम्बन्धित दस्तावेजों की समझ : विभिन्न रिकार्ड, संकलन एवं उपयोगिता।
- विद्यालय में दिन की शुरुआत : चेतना सत्र की समझ।

इकाई 2 : विद्यालय में परिवर्तन

- विद्यालय भवन का सृजनात्मक प्रयोग : सीखने सिखाने के माध्यम के रूप में।
- शिक्षा के अधिकार के अन्तर्गत विद्यालयी व्यवस्था में परिवर्तन।
- समावेशी शिक्षा के अनुरूप विद्यालय संगठन व प्रबन्धन।
- कला समेकित शिक्षा के माध्यम से विद्यालयी परिवेश एवं कक्षायी शिक्षण में बदलाव।
- सूचना व संचार तकनीकी का शिक्षण प्रक्रिया में प्रयोग।

इकाई 3 : विद्यालयी शिक्षण की व्यवस्थाएँ

- कक्षाकक्ष शिक्षण की प्रकृति : परम्परागत, बालकेन्द्रित, लोकतान्त्रिक, सृजनात्मक आदि।
- कक्षाकक्ष संचालन : कक्षा की व्यवस्था, कक्षा में सम्प्रेषण एवं सीखने-सिखाने के विविध स्तर।
- सीखने की योजना (लर्निंग प्लान) : अवधारणा, योजना निर्माण, क्रियान्वयन तथा स्वमूल्यांकन।
- पाठ्य-सहगामी व सह-शैक्षिक क्रियाएँ : महत्व, योजना एवं क्रियान्वयन (गतिविधियाँ, कला, खेल इत्यादि)।
- सीखने-सिखाने के दौरान आने वाली प्रमुख चुनौतियाँ तथा अनुपूरक शिक्षण की व्यवस्था।
- विद्यालय में आकलन एवं मूल्यांकन की व्यवस्था : सतत् एवं व्यापक आकलन, प्रगति पत्रक।

इकाई 4 : शिक्षक वृत्तिक विकास (प्रोफेशनल डेवेलपमेण्ट) के आयाम

- शिक्षक वृत्तिक विकास : अवधारणा, आवश्यकता, नीतिगत विमर्श व सीमाएँ।
- शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम : आवश्यकता, महत्व, प्रकार व स्वरूप।
- विद्यालय में नेतृत्व व्यवस्था और शिक्षक : प्रशासनिक, सामूहिक, शिक्षणशास्त्रीय, परिवर्तनकारी।
- शिक्षक तनाव प्रबन्धन : अवधारणा, तनाव के कारण एवं निदान।
- शिक्षक के वृत्तिक विकास में स्वाध्याय, लेखन व सहकर्मियों की भूमिका।

इकाई 5 : महत्वपूर्ण शैक्षिक संस्थाएँ, प्रशिक्षण केन्द्र व सरकारी योजनाओं की समीक्षात्मक समझ

- विभिन्न संस्थाओं के कार्यों की समझ तथा विद्यालय के सन्दर्भ में उपयोगिता—
  - निकटवर्ती जिला स्तरीय संस्थाएँ : संकुल संसाधन केन्द्र (CRC), प्रखण्ड संसाधन केन्द्र (BRC), जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान (DIET), प्रारम्भिक शिक्षक शिक्षा महाविद्यालय (PTEC)।
  - राज्य स्तरीय संस्थाएँ : राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद् (SCERT), बिहार शिक्षा परियोजना परिषद् (BEPC), बिहार विद्यालय परीक्षा बोर्ड (BSEB), बिहार संस्कृत शिक्षा बोर्ड (BSSB), बिहार राज्य मदरसा शिक्षा बोर्ड (BSMEB), बिहार मुक्त विद्यालयी शिक्षण एवं परीक्षा बोर्ड (BBOSE)।
  - राष्ट्रीय स्तर की संस्थाएँ : राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद् (NCERT), केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड (CBSE), राष्ट्रीय शैक्षिक योजना एवं प्रशासन विश्वविद्यालय (NUEPA), राष्ट्रीय शिक्षक शिक्षा परिषद् (NCTE)।
  - अन्तर्राष्ट्रीय एवं गैर-सरकारी संस्थाएँ : यूनिसेफ (UNICEF), वर्ल्ड बैंक (World Bank) व अन्य गैर-सरकारी संस्थाएँ।
- शैक्षिक योजनाओं से प्रमुख पहलुओं से परिचय तथा विद्यालय के सन्दर्भ में उपयोगिता—
  - सर्व शिक्षा अभियान (SSA)
  - राष्ट्रीय माध्यमिक शिक्षा अभियान (RMSA)
  - समेकित बाल विकास योजना (ICDS)
  - बालिकाओं की शिक्षा को प्रोत्साहित करने वाली विशेष योजनाएँ
  - उपेक्षित वर्ग के बच्चों की शिक्षा को प्रोत्साहित करने वाली विशेष योजनाएँ।

पाठ्य-पुस्तक

BR004 विद्यालय, संस्कृति, परिवर्तन और शिक्षक विकास —डॉ. पूजा शर्मा

भाषा की समझ तथा आरम्भिक भाषा विकास

पूर्णांक : 50 (35 + 15) **F-5** **अध्ययन अवधि : 40 घण्टा**

इकाई 1 : भाषा की प्रकृति

- भाषा का अर्थ
- भाषा : प्रतीकों की वाचिक व्यवस्था के रूप में, समझ के माध्यम के रूप में, सम्प्रेषण के माध्यम के रूप में।
- मानव भाषा और पशु-पक्षियों, पेड़-पौधों की भाषा में अन्तर।
- भाषा की नियमबद्ध व्यवस्था : ध्वनि संरचना, शब्द संरचना, वाक्य संरचना, प्रोक्ति (संवाद) संरचना।
- भाषा की विशेषताएँ।

इकाई 2 : भाषायी विविधता व बहुभाषिकता

- भारत का बहुभाषिक परिदृश्य : भारत में भाषाएँ एवं भाषा-परिवार।

- बिहार का बहुभाषिक परिदृश्य।
- भाषा और बोली।
- बहुभाषिकता के आयाम : बौद्धिक आयाम, शिक्षणशास्त्रीय आयाम।
- भाषाओं के सन्दर्भ में संवैधानिक प्रावधान : अनुच्छेद 343-351, आठवीं अनुसूची।
- बहुभाषिक कक्ष और केस स्टडी।

इकाई 3 : बच्चों का आरम्भिक भाषा विकास और विद्यालय में भाषा

- बच्चों में भाषा सीखने की क्षमता तथा बच्चों के भाषाई ज्ञान को समझना—विद्यालय आने से पहले बच्चों की भाषायी पूँजी।
- बच्चे भाषा कैसे सीखते हैं ? (स्किनर, चॉमस्की, वायगोत्स्की और पियाजे के विशेष सन्दर्भ में)।
- भाषा अर्जित करने और भाषा सीखने में अन्तर।
- विद्यालय में भाषा—विषय के रूप में—माध्यम भाषा के रूप में।
- भाषा सीखने-सिखाने के उद्देश्यों की समझ : कल्पनाशीलता, सृजनशीलता, संवेदनशीलता।
- भाषा के आधारभूत कौशलों—सुनना, बोलना, पढ़ना तथा लिखने का विकास। —शुरुआती पढ़ना-लिखना।
- लिपि और भाषा।

पाठ्य-पुस्तक

BR005 भाषा की समझ तथा आरम्भिक भाषा विकास —डॉ. नियती पाण्डेय

शिक्षा में जेण्डर और समावेशी परिप्रेक्ष्य

पूर्णांक : 50 (35 + 35) **F-6** **अध्ययन अवधि : 40 घण्टा**

इकाई 1 : समावेशी शिक्षा की समझ

- भारतीय समाज में समावेशन और अपवर्जन के विभिन्न रूप (हाशिए का समाज, जेण्डर, विशेष आवश्यकता वाले बच्चे—दिव्यांगजन)।
- कक्षाओं में विविधता और असमानता की समझ : पाठ्यचर्यात्मक और शिक्षणशास्त्रीय सन्दर्भ।
- समावेशी शिक्षा की अवधारणा एवं आवश्यकता।
- समावेशी शिक्षा के लिए आकलन की प्रकृति एवं प्रक्रिया।

इकाई 2 : विशेष आवश्यकता वाले बच्चे (दिव्यांगजन) और समावेशी शिक्षा

- समावेशी शिक्षा में विशेष आवश्यकता वाले बच्चों का सन्दर्भ : ऐतिहासिक विकास, वर्तमान स्थिति, चुनौतियाँ, बिहार का सन्दर्भ।
- विशेष आवश्यकता वाले बच्चे : विविध प्रकार, पहचान के तरीके व सीमाएँ।
- समावेशी कक्षा में विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के सीखने के लिए शिक्षा का स्वरूप।

इकाई 3 : जेण्डर विमर्श और शिक्षा

- जेण्डर : अवधारणा और सन्दर्भ, पितृसत्ता व नारीवाद विमर्श के सन्दर्भ में जेण्डर विभेद।
- बच्चों के समाजीकरण में जेण्डर की भूमिका : बचपन, परिवार, समुदाय, मीडिया।

- शिक्षा व्यवस्था व विद्यालय में प्रचलित जेण्डर विभेद : पाठ्यचर्या, पाठ्य-पुस्तकें, कक्षायी प्रक्रियाओं, विद्यार्थी-शिक्षक (स्टूडेण्ट-टीचर इन्टेरैक्शन) संवाद के विशेष सन्दर्भ में।
- जेण्डर संवेदनशीलता और समानता में शिक्षा की भूमिका।

पाठ्य-पुस्तक

BR006 शिक्षा में जेण्डर और समावेशी परिप्रेक्ष्य —**डॉ. सविता सक्सेना**

गणित का शिक्षाशास्त्र-1 (प्रारम्भिक स्तर)

पूर्णांक : 50 (35 + 15) **F-7** **अध्ययन अवधि : 40 घण्टा**

इकाई 1 : गणित की समझ

- गणित के बारे में भय, भ्रम और मिथक : गणित सबके लिए।
- दैनिक जीवन में गणित : आवश्यकता एवं महत्व।
- गणित की प्रकृति।
- गणितीयकरण।

इकाई 2 : प्राथमिक स्तर पर गणित : आधार, उद्देश्य एवं पाठ्यक्रम

- गणित सीखने-सिखाने के विविध आधार
  —बच्चे की गणितीय समझ एवं अनुभव
  —बच्चों की सामाजिक-सांस्कृतिक-आर्थिक परिप्रेक्ष्य की समझ
  —गणित एवं संज्ञानात्मक विकास।
- प्राथमिक स्तर पर गणित सीखने के उद्देश्य : राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा-2005, बिहार पाठ्यचर्या की रूपरेखा-2008, एन.सी.एफ.टी.ई.-2009, गणित आधार पत्र-2006 (एन.सी.ई.आर.टी.) के विशेष सन्दर्भ में।
- बिहार के प्राथमिक स्तर के गणित का पाठ्यक्रम एवं पाठ्य-पुस्तकें।

इकाई 3 : संख्या एवं संख्या संक्रियाएँ

- संख्यापूर्व अवधारणाओं का विकास।
- संख्या की अवधारणा की समझ।
- गिनती से परिचय।
- संख्या प्रत्यय की समझ का विकास एवं विभिन्न संकेतों के माध्यम से संख्याओं की प्रस्तुति।
- स्थानीय मान।
- गणितीय संक्रियाएँ एवं उनमें अन्तर्सम्बन्ध।

इकाई 4 : मापन एवं आँकड़े

- मापन का अर्थ।
- मापन और अनुमान।
- अमानक एवं मानक इकाइयाँ।
- मापन के दौरान होने वाली गलतियाँ।

- लम्बाई, क्षेत्रफल, धारिता, आयतन तथा समय का मापन।
- आँकड़ों का प्रत्यय तथा प्रस्तुतीकरण।

पाठ्य-पुस्तक

BR007 गणित का शिक्षणशास्त्र-1 (प्राथमिक स्तर) —डॉ. अंकित अग्रवाल,
—डॉ. गरिमा सक्सैना

हिन्दी का शिक्षणशास्त्र-1 (प्रारम्भिक स्तर)

पूर्णांक : 50 (35 + 15) **F-8** **अध्ययन अवधि : 40 घण्टा**

इकाई 1 : प्राथमिक स्तर पर हिन्दी : प्रकृति एवं उसके शिक्षण के उद्देश्य

- बच्चों की दुनिया में हिन्दी।
- हिन्दी भाषा की प्रकृति एवं प्राथमिक स्तर की हिन्दी की समझ।
- राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा-2005 और बिहार पाठ्यचर्या की रूपरेखा-2008 के आलोक में हिन्दी भाषा के उद्देश्यों को समझना।

इकाई 2 : प्राथमिक स्तर की की हिन्दी : पाठ्यचर्या-पाठ्यक्रम और पाठ्य-पुस्तकों की समझ

- बिहार के प्राथमिक स्तर की हिन्दी के पाठ्यचर्या—पाठ्यक्रम के उद्देश्य।
- प्राथमिक स्तर की पाठ्यचर्या—पाठ्यक्रम की संरचना।
- प्राथमिक स्तर की हिन्दी की पाठ्य-पुस्तकों एवं अभ्यास प्रश्नों की प्रकृति की समझ।

इकाई 3 : भाषायी क्षमताओं का विकास : सुनना व बोलना

- भाषायी क्षमताओं की संकल्पना : विभिन्न भाषायी क्षमताएँ और उनके बीच आपसी सम्बन्ध।
- सुनने व बोलने का अर्थ।
- सुनने व बोलने को प्रभावित करने वाले कारक।
- प्राथमिक स्तर के बच्चों के सुनने और बोलने की क्षमताओं का विकास :

  बच्चों को कक्षा में सुनने व बोलने के मौके उपलब्ध करवाना; जैसे—आज की बात, बातचीत, अपने बारे में बात करना, स्कूल अनुभवों पर बात करना, आँखों देखी या सुनी हुई घटनाओं के बारे में अभिव्यक्ति करना, बालगीत/कविता सुनना-सुनाना, कहानी सुनना-सुनाना, चित्र-वर्णन, दिए गए शब्दों से कहानी सुनाना, रोल प्ले करवाना, सुने हुए विचारों को संक्षिप्त व विस्तारित कर पाना, परिचित सम-सामयिक विषयों पर अपने विचार प्रस्तुत करना, बच्चों को कहानी, कविता, नाटक आदि रचने, उसे बढ़ाने तथा प्रस्तुत करने के अवसर देना (कविताओं, कहानियों व बालगीतों आदि के उदाहरण प्रारम्भिक कक्षाओं की हिन्दी की पाठ्य-पुस्तकों से भी लिए जाएँ)।
- भाषा सीखने के संकेतक : सुनने और बोलने के सन्दर्भ में।

इकाई 4 : पढ़ने की क्षमता का विकास

- पढ़ने का अर्थ : शुरुआती पढ़ना क्या है, शुरुआती 'पढ़ना' की चरणबद्ध प्रक्रिया को समझना।
- पढ़ने की प्रक्रिया और विभिन्न सोपानों में अनुमान लगाने, अर्थ समझने, लिपि पहचानने, पढ़कर प्रतिक्रिया देने, पढ़कर सार प्रस्तुत करने का तात्पर्य और महत्व।

- पढ़ने के प्रकार : सस्वर, मौन पठन, गहन पठन, विस्तृत पठन, शब्द और अर्थ का अनुमान लगाते हुए पढ़ना, स्किप रीडिंग, स्कैन रीडिंग आदि।
- पढ़ना सिखाने के विभिन्न तरीके और उनकी समीक्षात्मक समझ : वर्ण विधि, शब्द विधि, वाक्य विधि, अर्थपूर्ण सन्दर्भ आधारित उपागम।
- पढ़ना सीखने-सिखाने की प्रक्रिया में बाल साहित्य की भूमिका।
- भाषा सीखने के संकेतक : पढ़ने के सन्दर्भ में।

पाठ्य-पुस्तक

BR008 हिन्दी का शिक्षण-शास्त्र-1 (प्राथमिक स्तर) —**डॉ. निर्मला मिश्रा**

PROFICIENCY IN ENGLISH

Full Marks : 50 (35 + 15) **F-9** **Study Time : 40 Hrs.**

Unit 1 : Need and Importance of English Language

- English as a global language.
- English around us.
- Constitutional provision : English as an associate official language.
- Proficiency vs. achievement in English.

Unit 2 : Developing Oral Skills (Listening and Speaking)

- Importance of listening and speaking in acquiring proficiency in English.
- Identification and production of distinctive sounds in English : Syllable, Stress, intonation and rhythm.
- Recognizing words in various contexts.
- Identyfing meaning/gist, identifying emotions/feelings in an utterance.
- Producing language in acceptable forms : Conveying information, Formulating an appropriate response.
- Presentation skill.

Unit 3 : Developing Reading and Writing Skills

A. Reading :

- Study Skill
- Reading for local and global comprehension (including inferences and extrapolation).
- Extensive and intensive reading.
- Skimming and scanning.

B. Writing :

The focus of this section will be develoing writing skills in the following :

- Mechanics of writing : strokes, curves, proper shape, size and spacing.
- Writing messages, descriptions, reports, notices, applications, letter, invitations, posters, slogans.
- Writing a paragraph having coherence, cohesion and unity.

Unit 4 : Vocabulary Enrichment and Grammar in Context

A. Vocabulary :

- Words around us (list of active and passive words to be identified, including phrasal verbs and idoms) using them in different contexts.
- Content words and function words
- Antonyms, synonyms, homophones, homonyms.
- Word formationg (using prefixes and suffixes etc.)

B. Grammar in Context :

- Need and importance of Grammar : Notion of correctness vs notion of appropriateness.
- Traditional grammar vs Grammar in Context.
- Grammatical items : Types of sentences, Time and tense, Parts of speech, subject verb agreement, transformation of sentences (including voices, direct and indirect speech etc.), linkers, modals, prepositions and prepositional phrases.

पाठ्य-पुस्तक

BR009 Proficiency in English —**Dr. Shivani Rai**

पर्यावरण अध्ययन का शिक्षणशास्त्र

पूर्णांक : 50 (35 + 15) **F-10** **अध्ययन अवधि : 40 घण्टा**

इकाई 1 : पर्यावरण अध्ययन की अवधारणा

- प्रकृति एवं क्षेत्र।
- उद्देश्य एवं महत्व।
- राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा-2005 एवं बिहार पाठ्यचर्या की रूपरेखा-2008 के सन्दर्भ में पर्यावरण अध्ययन।
- पर्यावरण अध्ययन एकीकृत रूप में (एकीकृत उपागम)।
- प्राथमिक स्तर के पाठ्यक्रम में पर्यावरण अध्ययन का संयोजन व विस्तार : पर्यावरणीय प्रकरण (थीम) के प्रमुख आधार परिवार एवं मित्र, जल, भोजन, आवास, यात्रा, वस्तुओं का निर्माण एवं व्यवहार।

इकाई 2 : पर्यावरण अध्ययन के सन्दर्भ में हमारा एवं बच्चों का परिवेश

- बच्चों के परिवेश सम्बन्धी अनुभव, शिक्षण के आधार के रूप में।
- परिवेश की विविधता की समझ।
- अपने परिवेश से अन्य परिवेशों की तुलना।
- परिवेश सम्बन्धी सूचनाओं का संग्रह एवं विश्लेषण।

इकाई 3 : पर्यावरण अध्ययन का शिक्षणशास्त्र (शिक्षण-अधिगम) विधियाँ

पर्यावरण अध्ययन के शिक्षण उपागम में विविध शिक्षण विधियों का प्रयोग करके इसे रोचक व सार्थक बनाना, इस इकाई का प्रमुख उद्देश्य है। प्रस्तुत इकाई प्रशिक्षुओं को पर्यावरण अध्ययन की विविध-विधियों से परिचित कराती है तथा अपने परिवेश एवं पर्यावरण को समझने का तौर-तरीका बताती है।

- खोज/अन्वेषण विधि

- प्रोजेक्ट विधि
- परिभ्रमण एवं सर्वेक्षण विधि
- प्रयोगशाला विधि
- गतिविधि आधारित शिक्षण उपागम
- सामूहिक क्रियाकलाप
- प्रदर्शनी/चर्चा एवं संवाद आधारित विमर्श।

इकाई 4 : पर्यावरण अध्ययन के शिक्षण में शिक्षक की भूमिका तथा आकलन एवं मूल्यांकन

- पर्यावरण अध्ययन की कक्षा में शिक्षक की भूमिका।
- कक्षा के बाहर और भीतर गतिविधियों का आयोजन एवं संगठन।
- कैसे जुटाएँ सामग्रियाँ.
- आकलन
  - —अपने अध्यापन कार्य का विश्लेषण एवं सुधार का आधार
  - —विद्यार्थियों के कार्यों का बहुआयामी आकलन
  - —सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन प्रक्रिया
  - —सीखने के संकेतकों की समझ
  - —आकलन सम्बन्धी सूचनाओं का इस्तेमाल : रिपोर्टिंग एवं फीडबैक।

पाठ्य-पुस्तक

BR010 पर्यावरण अध्ययन का शिक्षणशास्त्र —डॉ. सुमन मेहरा

कला समेकित शिक्षा

पूर्णांक : 100 (60 + 40) **F-11** **अध्ययन अवधि : 80 घण्टा**

इकाई 1 : कला समेकित शिक्षा की समझ

- कला शिक्षा एवं कला समेकित शिक्षा की समझ
  - —कला क्या है
  - —कला शिक्षा : अवधारणा एवं महत्व
  - —कला समेकित शिक्षा : अवधारणा एवं महत्व
- समकालीन क्षेत्रीय कलाओं, कलाकारों एवं कारीगरों से परिचय
- 'कला शिक्षा' से 'कला समेकित शिक्षा' की ओर : अवधारणात्मक समझ
  - —बाल कला की समझ
  - —बच्चों की संज्ञानात्मक क्षमता के विकास में कला समेकित शिक्षा की भूमिका
  - —प्रारम्भिक स्तर की पाठ्यचर्या से कला समेकित शिक्षा का जुड़ाव।

इकाई 2 : दृश्य कला

- दृश्य कलाएँ : अवधारणात्मक समझ एवं शैक्षिक उपयोगिता।
- दृश्य कला सम्बन्धी कला अनुभव।
- दृश्य कलाओं के विविध प्रकार एवं सम्बन्धित सामग्री से परिचय एवं विकास : यथा- चित्र बनाना, मुखौटा, मिरर इमेज, कागज एवं कबाड़ से सामग्री निर्माण।

इकाई 3 : प्रदर्शन कला

- प्रदर्शन कला : अवधारणात्मक समझ एवं उपयोगिता
- प्रदर्शनी कला सम्बन्धी कला अनुभव
- प्रदर्शन कला के विविध प्रकार एवं उनकी तैयारी—
  —वाचन, सृजनात्मक लेखन एवं सम्प्रेषण कला
  —संगीत, गायन एवं नृत्य : लोक, शास्त्रीय एवं समकालीन
  —परछाई से रोचक स्वरूपों को गढ़ना
  —नाटक मंचन के विविध स्वरूप।
- 'शिक्षा में रंगमंच' की अवधारणा समझ तथा उपयोगिता।

इकाई 4 : कला अनुभव का शिक्षण में सृजनात्मक प्रयोग

- 'सीखने की योजना' और कला समेकित शिक्षा : प्रमुख बिन्दु एवं चुनौतियाँ।
- विभिन्न कला सामग्रियों का शिक्षण में प्रयोग : विषयों की विषयवस्तु के सन्दर्भ में सीखने की योजना एवं क्रियान्वयन।
- विद्यालय के भवन, जगह, समय और गतिविधि में कला अनुभव के समावेश के तरीके।
- सीखने-सिखाने में कला अनुभव के प्रभावी समावेश हेतु शिक्षक एवं विद्यालय की भूमिका।

इकाई 5 : कला समेकित शिक्षा में आकलन एवं मूल्यांकन

- कला समेति शिक्षा में आकलन एवं मूल्यांकन : अवधारणात्मक समझ, बच्चों के सह-शैक्षिक (को-स्कोलास्टिक) मूल्यांकन में भूमिका, क्रियानव्यन के दौरान याद रखे जाने वाले प्रमुख बिन्दु।
- आकलन एवं मूल्यांकन के संकेतक : अर्थ, दृश्य कला एवं प्रदर्शन कला के सन्दर्भ में।
- कला में मूल्यांकन के विभिन्न उपागमों एवं तकनीकों की समझ : अवलोकन (आबजर्वेशन) सूची, परियोजना कार्य, पोर्टफोलियो, चेक लिस्ट, रेटिंग स्केल, घटना वृत्तान्त (एनॅकडॉटल रेकार्ड), प्रदर्शनी डिस्प्ले व प्रेजेण्टेशन) आदि।
- आकलन एवं मूल्यांकन को सम्प्रेषित एवं प्रस्तुत करने के विविध तरीके।

पाठ्य-पुस्तक

BR011 कला समेकित शिक्षा —डॉ. सविता शर्मा

शिक्षा में सूचना एवं संचार तकनीकी (आई.सी.टी.)

पूर्णांक : 100 (40 + 60) **F-12** **अध्ययन अवधि : 80 घण्टा**

इकाई 1 : शिक्षा में सूचना एवं संचार तकनीकी का परिचय

- सूचना तथा संचार तकनीकी की अवधारणा तथा समझ।
- सूचना एवंसंचार तकनीकी के विभिन्न अवयव।
- शिक्षा में सूचना एवं संचार तकनीकी की उपयोगिता एवं महत्व।
- समावेशी शिक्षा के लिए सूचना एवं संचार तकनीकी।

इकाई 2 : सूचना एवं संचार तकनीकी के विविध उपकरण

- शिक्षण-अधिगम में ऑडियो-वीडियो, मल्टीमीडिया साधनों की महत्ता तथा उपयोग।
- कम्प्यूटर एवं मोबाइल (हैण्डहेल्ड उपकरण) का संक्षिप्त परिचय।

- कम्प्यूटर के विभिन्न प्रकार एवं घटक।
- कम्प्यूटर : स्मृति, भण्डारण एवं क्लाउड स्टोरेज।
- सॉफ्टवेयर के प्रकार।
- शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में कम्प्यूटर एवं मोबाइल की भूमिका।

इकाई 3 : सूचना एवं संचार तकनीकी के अन्तर्गत ऑफिस ऑटोमेशन का अनुप्रयोग

- वर्ड प्रोसेसर : कार्य, सामान्य कौशल तथा शैक्षिक महत्त्व।
- स्प्रेडशीट : कार्य, सामान्य कौशल तथा शैक्षिक महत्त्व।
- प्रेजेन्टेशन सॉफ्टवेयर : कार्य, सामान्य कौशल तथा शैक्षिक महत्त्व।
- कुछ अन्य उपयोगी सॉफ्टवेयर।

इकाई 4 : शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में इण्टरनेट

- इण्टरनेट : उपयोगिता, शैक्षिक महत्व एवं शिक्षण अधिगम प्रक्रिया के सन्दर्भ में उपयोग।
- विभिन्न प्रकार के ब्राउजर, सर्च इंजन एवं उनकी उपयोगिता।
- ई-मेल, सोशल नेटवर्किंग एवं इण्टरनेट उपयोग में सुरक्षा मूल्यों तथा सिद्धान्त।
- ई-लर्निंग एवं ओपेन लर्निंग सिस्टम।
- ओ.ई.आर. (ओपन एजुकेशनल रिसोर्जेज) : समझ, स्रोत एवं शिक्षण अधिगम में उनका उपयोग।

इकाई 5 : प्राथमिक स्तर के विषयों के सिक्षण में आई.सी.टी. का उपयोग

- सीखने की योजना एवं विद्यालय के अन्य कार्य के साथ आई.सी.टी. का एकीकरण।
- भाषा, गणित एवं पर्यावरण अध्ययन में आई.सी.टी. संसाधन का प्रयोग।
- मूल्यांकन में आई.सी.टी. का महत्व एवं उपयोग।

पाठ्य-पुस्तक

BR012 शिक्षा में सूचना एवं संचार तकनीकी —**डॉ. विजय सिंह**

SEP-1

विद्यालय अनुभव कार्यक्रम-1

(School Experience Programme-1)

विद्यालय की पाठ्यचर्या में शिक्षकों के लिए हर रोज सीखने के बहुत सारे अवसर होते हैं। यदि कक्षायी शिक्षण से लेकर विद्यालय की तमाम गतिविधियों के सजग विश्लेषण का कौशल प्रशिक्षुओं में विकसित कर दिया जाए तो वे अपने कार्यों में कई नवाचार ला सकते हैं। विद्यालय अनुभव कार्यक्रम के इस पहले भाग में प्रशिक्षुओं में कुछ ऐसे कौशलों को विकसित करने की अपेक्षा है जिससे वे अपने कार्य का स्वयं से विश्लेषण करके समस्याओं का समाधान कर सकें। इसके अन्तर्गत प्रशिक्षुओं को न्यूनतम चार सप्ताह के लिए अपने विद्यालय में कुछ कार्यों को करना है, जिनकी रूपरेखा निम्नलिखित है—

SEP विद्यालय अनुभव कार्यक्रम-1 100 अंक : इसमें पूर्णतः आन्तरिक मूल्यांकन की योजना है। अर्थात् प्रशिक्षुओं द्वारा दिये जाने वाले अपेक्षित गतिविधियों का मूल्यांकन उसी प्रशिक्षण केन्द्र/संस्थान के साधनसेवी या प्रशिक्षकगण करेंगे। इसके अन्तर्गत साधन-सेवियों को लगभग समान संख्या में प्रशिक्षु आवंटित कर दिये जाएँगे। इस तरह हर

साधनसेवी के पास मेंटरिंग के लिए लगभग 15-20 प्रशिक्षु आएँगे। हर साधनसेवी सह मेन्टर का यह कार्य होगा कि वह निम्नलिखित गतिविधियों को करने के लिए अपने प्रशिक्षुओं को सुझाव दें और फिर उनका मूल्यांकन करें।

	गतिविधियाँ	अंक
1.	कक्षायी शिक्षण व गतिविधियों का अवलोकन तथा विश्लेषण	30
2.	एक्शन रिसर्च	30
3.	विद्यालय उन्नयन योजना	20
4.	विद्यालय में बच्चों से बातचीत का विश्लेषण	20
	कुल	100

1. कक्षायी शिक्षण व गतिविधियों का अवलोकन एवं विश्लेषण

कक्षा में हो रहे शिक्षण का अवलोकन एक जटिल कार्य है जिसमें शिक्षक और बच्चे, दोनों की गतिविधियाँ साथ-साथ चलती हैं। अतः अवलोकन का केन्द्र केवल शिक्षक द्वारा किया जा रहा शिक्षण कार्य ही नहीं बल्कि बच्चों द्वारा जाने वाली गतिविधियाँ भी होंगी। इस कार्य के माध्यम से प्रत्येक प्रशिक्षु में कक्षायी शिक्षण का गहन अवलोकन करने की क्षमता का विकास करना है ताकि वे कक्षायी शिक्षण के विभिन्न आयामों की पहचान कर सकें तथा उनका विश्लेषण डी.एल.एड. कार्यक्रम के विभिन्न विषयपत्रों जैसे—'समाज, शिक्षा और पाठ्यचर्या की समझ', 'बचपन और बाल विकास', 'भाषा की समझ और आरम्भिक भाषा विकास', 'विद्यालय संस्कृति, परिवर्तन और शिक्षक विकास' आदि से प्राप्त समझ के आधार पर कर सकें।

कक्षा के प्रत्यक्ष तत्वों का अवलोकन करना भी उतना सरल नहीं है जैसा प्रतीत होता है। इसके लिए भी कुछ अपेक्षित कौशलों की अनिवार्य आवश्यकता होती है। इस कार्य के अन्तर्गत कक्षायी शिक्षण का अवलोकन मुख्यतः दो तरीकों से किया जाएगा। शुरुआती अवलोकन के लिए प्रत्येक प्रशिक्षु द्वारा अवलोकन सूची का विकास किया जाएगा जिसमें अवलोकन के विभिन्न पक्षों को दर्ज किया जाएगा। अवलोकन करने से पूर्व, इस सूची को प्रत्येक प्रशिक्षु अपने मेन्टर से समीक्षा करवाएँगे और प्राप्त सुझावों के आधार पर अवलोकन सूची को सम्वर्धित करके विद्यालय में अवलोकन हेतु ले जाएँगे। चार सप्ताह में से दो सप्ताह का अवलोकन, प्रशिक्षु द्वारा विकसित अवलोकन सूची के आधार पर किया जाएगा। यह स्पष्ट किया जा रहा है कि प्रत्येक प्रशिक्षु को अपना अवलोकन सूची स्वयं विकसित करना है। अतः सभी के अवलोकन सूची में कुछ विभिन्नताएँ हो सकती हैं।

दूसरे प्रकार के अवलोकन के लिए प्रशिक्षु को सीधा-सीधा कक्षा में जाना है और यह लिखते जाना है कि कक्षा में वे क्या-क्या अवलोकित कर रहे हैं। इस प्रकार के अवलोकन के लिए कोई प्रारूप नहीं होगा। लेकिन यह अपेक्षा है कि प्रशिक्षु में अवलोकन के कुछ सामान्य बिन्दुओं की समझ पहले वाले अवलोकन सूची के आधार पर अवलोकन करने से विकसित हो गई होगी, जिसका इस्तेमाल अब वे खुले तौर पर अवलोकन करने के दौरान करेंगे। बिना किसी प्रारूप का अवलोकन तीसरे और चौथे सप्ताह के दौरान किया जाना चाहिए।

2. एक्शन रिसर्च

हर शिक्षक को विद्यालय में शिक्षण के दौरान कई समस्याओं व चुनौतियों का अनुभव होता है। साथ ही उनके मन में शिक्षा से सम्बन्धित कई जिज्ञासाएँ भी जाग्रत होती हैं। एक कुशल शिक्षक से यह अपेक्षा की जाती है कि वह अपनी शिक्षण समस्याओं, चुनौतियों व जिज्ञासाओं का समाधान वैज्ञानिक विधि (Scientific method) के माध्यम से करें। अतः

प्रशिक्षुओं को शिक्षण के साथ-साथ शोध-कार्य करना भी महत्वपूर्ण है, ताकि उनमें वैज्ञानिक दृष्टिकोण विकसित हो सकें। इसी उद्देश्य के अन्तर्गत विद्यालय अनुभव कार्यक्रम में एक्शन रिसर्च को भी रखा गया है ताकि प्रशिक्षुओं में विभिन्न विषयों के अन्तर्गत एक्शन रिसर्च करने की क्षमता विकसित हो सके।

3. विद्यालय उन्नयन योजना

प्रशिक्षुओं का विद्यालय विशेष के सन्दर्भ में कई अनुभव रहे होंगे। उन अनुभवों में उनके विद्यालय से जुड़े तमाम आँकड़े भी शामिल होंगे। यदि उन आँकड़ों को व्यवस्थित करके विश्लेषण किया जाए तो विद्यालय के विकास में मदद मिल सकती है। अतः इस कार्य के अन्तर्गत, प्रशिक्षु अपने विद्यालय के सन्दर्भ में आँकड़ों का विश्लेषण करके विद्यालय के लिए एक उन्नयन योजना का निर्माण करेंगे। फिर अपने द्वारा बनायी गयी योजनानुसार वे उस विद्यालय में कार्य करेंगे।

4. विद्यालय में बच्चों से बातचीत का विश्लेषण

विद्यालय में उत्साही और भयमुक्त माहौल के निर्माण हेतु शिक्षकगणों और बच्चों के मध्य निरन्तर संवाद होना जरूरी है। अक्सर शिक्षकगणों और बच्चों के बीच की बातचीत केवल कक्षाकक्ष के सवाल-जवाबों तक ही सिमट कर रह जाती है, जिसके कारण शिक्षकों का बच्चों के साथ वैसा सम्पर्क नहीं बन पाता है जिससे वे अभिप्रेरित हो सकें और अपने चुनौतियों को शिक्षकों से साझा कर सकें।

इस कार्य के अन्तर्गत प्रशिक्षु को अपने विद्यालय के किसी भी कक्षा के बच्चों के एक समूह के साथ सामान्य बातचीत करनी है, जो किसी विषय के शिक्षण से सम्बन्धित न हो। ऐसे संवाद का विषय बच्चों के समूह के मुताबिक और उनके पसन्द का हो। स्कूल के बाहर के किसी प्रसंग, किसी भी तत्कालीन घटना, कल घर पर क्या किया, गाँव-शहर में होने वाली किसी आयोजन, त्योहार आदि से सम्बन्धित किसी भी प्रसंग पर खुली बातचीत की जाए। ध्यान रहे कि यह बातचीत सवाल-जवाब का स्वरूप न ले ले, जिसमें शिक्षक सवालकर्ता हो जाए और बच्चे जवाब देते रहें। जिस प्रकार बच्चे कोई बात कर रहे हों, ऐसा होना चाहिए कि शिक्षक या शिक्षिका भी उसमें समान रूप से भागीदारी निभाए।

इस तरह प्रत्येक प्रशिक्षु अपने विद्यालय के बच्चों से न्यूनतम दो चर्चाएँ करेंगे और उस चर्चा में बच्चों ने क्या-क्या साझा किया और उसके आधार पर बच्चों के विषय में प्रशिक्षु ने क्या जाना-समझा, इस पर एक रिपोर्ट बनाकर द्वितीय सत्र के अन्तर्गत प्रशिक्षण केन्द्र पर अपने निर्धारित साधनसेवी को जमा कराएँगे। विश्लेषण के दौरान प्रशिक्षु अपनी उस समझ का इस्तेमाल जरूर करें जो उन्होंने डी.एल.एड. कार्यक्रम के आधार विषयपत्रों; जैसे—'समाज, शिक्षा और पाठ्यचर्या की समझ', 'बचपन और बाल विकास', 'भाषा की समझ और 'प्रारम्भिक भाषा विकास', 'विद्यालय संस्कृति, परिवर्तन और शिक्षक विकास' आदि के माध्यम से पाया है।

विद्यालय अनुभव कार्यक्रम-1 के अन्तर्गत किये गये प्रदत्त कार्य केवल डी.एल.एड. कार्यक्रम के दौरान औपचारिक तौर पर करने के लिए नहीं हैं बल्कि मूल उद्देश्य यह है कि ये सभी कार्य प्रशिक्षुओं के विद्यालयी कामकाज के स्वाभाविक हिस्से बन जाएँ। अतः अपेक्षा है कि हर प्रशिक्षु अपने विद्यालय में शिक्षण पर्यन्त इनका निरन्तर प्रयोग करते रहेंगे, जिसके पीछे कोई औपचारिक निर्देश नहीं बल्कि अपने शिक्षण के प्रति संवेदनशीलता एवं प्रतिबद्धता की अभिप्रेरणा होगी।

Library

बिहार डी.एल.एड. पाठ्यचर्या की रूपरेखा

दो वर्षीय डी.एल.एड. (फेस-टू-फेस) पाठ्यचर्या पाठ्यक्रम की रूपरेखा

नि:शुल्क वितरण हेतु

SHRI VINOD PUSTAK MANDIR
Corporate Office : Plot No. 4, Mauja Kakretha,
Near Foot On Shoes, Sikandra, Agra
Sales Office : Dr. Rangeya Raghava Marg, Agra-2
Ph. : (0562) 2855187, 2855179
Mob. : 8449751133, 9837349207
Fax : 0562-2524532
E-mail : rsainternational@rediffmail.com,
shrivinodpustakmandir@gmail.com
Website : www.vinodpustakmandir.in

द्वितीय वर्ष
(Second Year)

कोड	विषय	Credit	बाह्य परीक्षा	आन्तरिक
S-1	समकालीन भारतीय समाज में शिक्षा	4	70	30
S-2	संज्ञान, सीखना और बाल विकास	4	70	30
S-3	कार्य और शिक्षा	2	—	50
S-4	स्वयं की समझ	2	35	15
S-5	विद्यालय में स्वास्थ्य, योग एवं शारीरिक शिक्षा	4	40	60
S-6	Pedagogy of English (Primary Level)	2	35	15
S-7	गणित का शिक्षणशास्त्र-2 (प्राथमिक स्तर)	2	35	15
S-8	हिन्दी का शिक्षणशास्त्र-2 (प्राथमिक स्तर)	2	35	15
S-9	उच्च-प्राथमिक स्तर (कक्षा 6-8) के किसी एक विषय का शिक्षणशास्त्र	2	35	15
SEP-2	विद्यालय अनुभव कार्यक्रम-2 (इण्टर्नशिप) (16 सप्ताह)	16	100	300
द्वितीय वर्ष कुल अंक (1000)		**40**	**455**	**545**

S-1. समकालीन भारतीय समाज में शिक्षा

इकाई 1 : समकालीन भारतीय समाज की चुनौतियाँ और शिक्षा

● विविधता, असमानता तथा वंचना : अवधारणात्मक समझ तथा शैक्षिक सन्दर्भ ● समाज में सत्ता, वर्चस्व तथा प्रतिरोध : अवधारणा, प्रकार, कारकों तथा प्रभावों की समझ ● समता, समानता और सामाजिक न्याय के लिए शिक्षा : अवधारणा, आवश्यकता एवं अवरोध

इकाई 2 : शिक्षा के समकालीन मुद्दे

● आधुनिकीकरण, वैश्वीकरण, सामाजिक परिवर्तन तथा शिक्षा ● शिक्षा में गुणवत्ता का सवाल ● सार्वजनिक शिक्षा बनाम निजी शिक्षा ● शिक्षा का निजीकरण : उदारवादी दृष्टिकोण तथा आलोचनात्मक विमर्श ● अभिवंचित एवं उपेक्षित वर्ग के लिए शिक्षा ● समान विद्यालय व्यवस्था

इकाई 3 : शिक्षा के राजनैतिक एवं संवैधानिक सन्दर्भ

● राज्य, लोकतन्त्र और शिक्षा : भारतीय संविधान के सन्दर्भ में ● शिक्षा का सार्वभौमीकरण : अवधारणा, अवरोध एवं राज्य की भूमिका ● बच्चे और शिक्षा का अधिकार : संवैधानिक प्रावधान एवं सम्बन्धित विमर्शों के परिप्रेक्ष्य में ● राष्ट्रीय विकास और शिक्षा

इकाई 4 : शिक्षा और सामाजिक अपेक्षाएँ

● शिक्षा, विद्यालय तथा समुदाय : अपेक्षा, समकालीन बदलाव तथा प्रभाव ● शिक्षायी संस्थाएँ : सामाजिक परिवर्तन व पुनर्निर्माण के अभिकरण के रूप में ● आर्थिक सुधारों का शिक्षा पर प्रभाव ● शिक्षा और 'माध्यम' भाषा ● समाज में नवाचार और विकास के लिए शिक्षा

इकाई 5 : विद्यालय और शिक्षा नीतियाँ : शिक्षा की समकालीन समझ के सन्दर्भ में

● विद्यालयी शिक्षा का विकास : ऐतिहासिक एवं समकालीन नीतिगत परिप्रेक्ष्य ● विद्यालयों के नाम, व्यवस्था तथा भवन संरचनाओं के नीतिगत सन्दर्भ ● शिक्षक और शिक्षा नीतियाँ ● विद्यालयी पाठ्यचर्या और मूल्यांकन प्रक्रिया पर नीतियों का प्रभाव

पाठ्य-पुस्तक

BR014 समकालीन भारतीय समाज में शिक्षा —डॉ. रामशकल पाण्डेय

S-2. संज्ञान, सीखना और बाल विकास

इकाई 1 : बच्चों के संज्ञानात्मक एवं संप्रत्यय विकास

● संज्ञानात्मक विकास की समझ (बच्चों का सन्दर्भ) ● संज्ञानात्मक विकास और सीखना (ज्याँ प्याजे के सिद्धान्त का विशेष सन्दर्भ) ● संज्ञानात्मक विकास और बुद्धि की अवधारणा का ऐतिहासिक सन्दर्भ तथा समकालीन सन्दर्भ में बुद्धि की सैद्धान्तिक समझ ● बच्चों में सम्प्रत्यय विकास : सम्बन्धित मानसिक प्रक्रियाएँ एवं प्रभावित करने वाले कारक—ब्रूनर मॉडल एवं अन्य सैद्धान्तिक आधार; —कार्य-कारण की समझ का विकास

इकाई 2 : बाल विकास एवं सीखना

● बाल विकास और सीखने में अन्तर्सम्बन्ध : परिचयात्मक समझ, परिपक्वता और सीखना ● सीखने की योग्यता एवं निर्योग्यता (लर्निंग डिसेबिलिटी) ● सीखने का एवं सीखने के लिए आकलन

इकाई 3 : सीखने के व्यवहारवादी एवं सूचना प्रसंस्करण सिद्धान्तों की समझ

● व्यवहारवाद के दृष्टिकोण से सीखने का आशय : अवधारणा एवं आधारभूत मान्यताएँ ● अनुक्रिया अनुबन्ध सिद्धान्त (पावलव) का सन्दर्भ, विश्लेषण, आलोचनात्मक समझ व शैक्षिक निहितार्थ ● सक्रिय अनुबन्ध सिद्धान्त (स्किनर) का सन्दर्भ, विश्लेषण, आलोचनात्मक समझ व शैक्षिक निहितार्थ ● सूचना प्रसंस्करण मॉडल के अनुसार सीखने की प्रक्रिया

इकाई 4 : बच्चों के विकास एवं सीखने में समाज की भूमिका

● सीखने और समाज में अन्तर्सम्बन्ध ● सामाजिक अधिगम का सिद्धान्त (बैण्डूरा) : प्रेक्षण व समाजीकरण द्वारा सीखना, शैक्षिक निहितार्थ ● सामाजिक-सांस्कृतिक सिद्धान्त (वायगोत्स्की) : प्रमुख मान्यताएँ, शैक्षिक निहितार्थ एवं समालोचना

इकाई 5 : सीखने को प्रभावित करने वाले कारक

● सीखने के न्यूरोदैहिक (न्यूरो-फिजियोलॉजिकल) आधार : मस्तिष्क की संरचना एवं सीखने में इसकी भूमिका, सीखने के न्यूरोदैहिक सन्दर्भ में हुए शोध के शैक्षिक निहितार्थ ● सीखने में अभिप्रेरणा व अवधान (अटेन्शन) की भूमिका, प्रक्रिया एवं विविध स्वरूप ● सीखने-सिखाने में स्मृति (मेमोरी) की भूमिका एवं शैक्षिक निहितार्थ

पाठ्य-पुस्तक

BR015 संज्ञान, सीखना और बाल विकास —पी. डी. पाठक

S-3. कार्य और शिक्षा

इकाई-1 : कार्य और शिक्षा—अवधारणात्मक समझ

● कार्य और शिक्षा : अवधारणा तथा ऐतिहासिक सन्दर्भ ● कार्य और ज्ञान की दुनिया का जुड़ाव; ★ पाठ्यपुस्तक-केन्द्रित शिक्षण से आगे, ★ बाल कार्य (चाइल्ड वर्क) बनाम बाल श्रम (चाइल्ड लेबर), ★ कौशल विकास के लिए कार्य ● पाठ्यचर्या में कार्य की भूमिका : कार्यकेन्द्रित शिक्षणशास्त्र की समझ

इकाई-2 : कार्य और शिक्षा—प्रायोगिक सन्दर्भ

अनिवार्य कार्य :

● **दैनिक जीवन के अभिन्न कार्य**—साफ-सफाई, खाना पकाना, घरेलू सामानों की मरम्मत, घरेलू जिम्मेवारियों में भागीदारी, घरेलू बजट बनाना, अपने आस-पास के परिवेश का रख-रखाव। ● **कृषि एवं बागवानी**—इसके लिए उपयुक्त जमीन का निर्माण; स्थानीय फल-फूल, सब्जी, वनस्पतियों एवं फसलों की जानकारी तथा उनको उगाना; सिंचाई और खादों के बारे में समझ, वृक्षारोपण, फूलवारी, किचेन गार्डन बनाना। ● **मिट्टी का काम**—मिट्टी के बर्तन, खिलौने, गमले, मॉडल, मूर्ति आदि बनाना; चाक के माध्यम से मिट्टी के बर्तन बनाने की प्रक्रिया को समझना; तरह-तरह की मिट्टियों को जानना।

वैकल्पिक कार्य : (निम्न में से कोई दो कार्य)

● **बिजली का काम**—समान्य वायरिंग की समझ, बिजली के घरेलू उपकरणों की मरम्मत, स्विच लगाना, बिजली बचाने के तरीकों की समझ, रोशनी करने के नये उपकरणों की समझ, विद्युतीय ऊर्जा के नवीकरणीय स्रोतों की समझ एवं उपयोग, इलेक्ट्रिकल टूल्स की समझ। ● **बायोडिग्रेडेबल तथा नॉन-बायोडिग्रेडेबल कूड़ा का**

प्रबन्धन—कूड़ा संग्रह के नवाचारी तरीके, उनकी व्यवस्था की समझ, कबाड़ से जुगाड़ की अवधारणा की समझ, जागरूकता कार्यक्रम, अपने घर के कूड़े के उचित निपटारे की समझ। ● **पशुपालन व लघु उद्योग की समझ**—मत्स्य, मधुमक्खी पालन, रेशम उद्योग, दुग्ध उद्योग आदि की समझ। आस-पास के किसी एक सम्बन्धित पशुपालन केन्द्र तथा लघु उद्योग का केस स्टडी करना। ● **फोटोग्राफी-रिपोर्टिंग-फिल्म बनाना**—फोटो खींचने की कला, विडियोग्राफी, सामान्य फिल्मों या ऑडियो-वीडियो क्लिपिंग को बनाना। ● **स्थानीय सन्दर्भ के अनुसार कोई अन्य कार्य विकल्प**—प्रशिक्षण केन्द्र व प्रशिक्षु द्वारा तय किया जाए। जैसे कि स्थानीय कलाओं व दस्तकारी का कार्य आदि।

इकाई-3 : प्रशिक्षण केन्द्र तथा विद्यालय में कार्य और शिक्षा का सन्दर्भ

● प्रशिक्षण केन्द्र तथा विद्यालयी परिवेश को साफ-सुथरा तथा आकर्षक बनाने के लिए योजना निर्माण तथा उसके अनुरूप कार्य। ● प्रशिक्षण केन्द्र तथा विद्यालय में कृषि/बागवानी का कार्य। ● अपने सहकर्मियों तथा विद्यार्थियों के साथ मिट्टी का काम करना। ● प्रशिक्षण केन्द्र तथा विद्यालय में बिजली से सम्बन्धित उपकरणों के रख-रखाव तथा मरम्मत में सहयोग करना। ● प्रशिक्षण केन्द्र तथा विद्यालय में बायोडिग्रेडेबल तथा नॉन-बायोडिग्रेडेबल कूड़ा का प्रबन्धन करना। ● शिक्षण से सम्बन्धित ऑडियो-वीडियो क्लिपिंग्स का निर्माण करना। ● प्रशिक्षण केन्द्र तथा विद्यालय के सभी लोगों के साथ मिलकर कुछ वैसा सामाजिक कार्य करना जिससे आस-पास के लोगों की जिन्दगी पर सकारात्मक बदलाव आए या उनका सामान्य जीवन समृद्ध हो।

पाठ्य-पुस्तक

BR013 कार्य और शिक्षा —डॉ. के. सी. वशिष्ठ

S-4. स्वयं की समझ

इकाई 1 : एक व्यक्ति के रूप में स्वयं को समझना

● अपने व्यक्तित्व को समझने की जिज्ञासा : 'मैं कौन हूँ', 'सेल्फ' बनाम 'इगो', अस्मिता के पहलू ● अपने 'सेल्फ पोट्रेट' लिखना ● आत्म-अभिव्यक्ति की समझ : अपनी स्वीकार्यता, स्वाभिमान, आत्मविश्वास, आत्म-अभिप्रेरणा ● शिक्षक/शिक्षिका के तौर पर अपने मजबूत एवं कमजोर पक्षों का प्रोफाईल बनाना तथा उसके कारणों पर विचार करना ● उपरोक्त बिन्दुओं से सम्बन्धित कार्यशालाओं का आयोजन

इकाई 2 : अपनी अस्मिता के प्रति सजगता

● शिक्षकों की अस्मिता : समकालीन विमर्श; एक 'आदर्श' शिक्षक की संकल्पना ● शिक्षक की अस्मिता सम्बन्धी सैद्धान्तिक परिप्रेक्ष्य ● अपनी धारणाओं, चिन्तन एवं व्यवहार को समझना : विभिन्न आयामों तथा उनमें बदलाव की समझ ● शिक्षक के रूप में अपनी भूमिका की पहचान तथा इसके चुनौतियों की समझ : विद्यालय संस्कृति के सन्दर्भ में ● उपरोक्त बिन्दुओं से सम्बन्धित कार्यशालाओं का आयोजन तथा विभिन्न कार्यकलाप

इकाई 3 : अपने कार्यों तथा जीवन उद्देश्यों की समझ

● अपने जीवन लक्ष्यों को विकसित करना तथा उनके भौतिक, भावनात्मक तथा आध्यात्मिक परिप्रेक्ष्यों को समझना ● स्वयं के बारे में अपने सहकर्मियों, विद्यार्थियों,

समुदाय आदि की धारणाओं को जानना ● दैनिक रिफ्लेक्टिव डायरी लिखना और उसको स्वयं को समझने के लिए प्रयोग करना ● कार्यशाला में प्रेरणादायी कहानियों, फिल्मों आदि पर चर्चा ● अपनी खूबी को पहचानना, उसे प्रदर्शित करना तथा शिक्षण में प्रयोग करने के तरीकों को समझना

पाठ्य-पुस्तक

BR016 **स्वयं की समझ**

—डॉ. सविता शर्मा

S-5. विद्यालय में स्वास्थ्य, योग एवं शारीरिक शिक्षा

इकाई-1 : शारीरिक शिक्षा की समझ

● शारीरिक शिक्षा : अवधारणा एवं महत्त्व ● शिक्षा एवं स्वास्थ्य से शारीरिक शिक्षा का जुड़ाव, ★ भावनात्मक स्वास्थ्य, शारीरिक स्वास्थ्य तथा संज्ञान के अन्तर्सम्बन्धों की समझ ● प्रारम्भिक कक्षा के बच्चों के लिए शारीरिक शिक्षा का समावेशी स्वरूप : ★ बच्चों की विविध क्षमताओं एवं आवश्यकताओं का ध्यान, ★कक्षा, विद्यालय तथा स्थानीय सन्दर्भ के अनुसार गतिविधियों का समावेशन ● गतिविधियों के दौरान बच्चों का प्रेक्षण (सुपरवाईजिंग) एवं मार्गदर्शन (गाइडिंग)

इकाई-2 : खेल एवं खेलकूद

● खेल एवं खेलकूद :- अवधारणा और महत्त्व (प्रारम्भिक विद्यालयी स्तर के विशेष सन्दर्भ में) ● खेलकूद के बुनियादी आधार, ★ आनन्द (मजे के लिए), ★ सुरक्षा (सुरक्षित वातावरण, शारीरिक एवं भावनात्मक सुरक्षा), ★ सब की सहभागिता (लड़के, लड़कियों, विशेष आवश्यकता वाले बच्चों का समावेशन), ★ अनुभव करके सीखना (बच्चों द्वारा स्वयं से खेल के नियमों को समझना, बनाना, आदि) ● प्रारम्भिक विद्यालय के विभिन्न खेलकूद तथा उनका आयोजन, ★ बच्चों द्वारा रोजाना खेले जाने वाले स्थानीय रोचक खेल, ★ कक्षा के अन्दर और विद्यालय प्रांगण में कराए जाने योग्य रोचक खेल, ★ एथलेटिक्स, कबड्डी, खो-खो, फुटबॉल, हॉकी, वॉलीबॉल, क्रिकेट, बैडमिण्टन, कैरम, शतरंज आदि आउटडोर व इनडोर खेलों के आयोजन की बुनियादी समझ ● प्रारम्भिक विद्यालय की समय-सारणी में खेलकूद का स्थान तथा इसका प्रभावी उपयोग ● चोट एवं जख्म से बचाव तथा प्राथमिक उपचार : फस्ट ऐड सामग्री एवं प्रक्रिया को समझ ● प्रमुख राज्यस्तरीय, राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय खेल आयोजनों से परिचय

इकाई-3 : विद्यालय में योग

● योग : अवधारणा एवं महत्त्व ● प्राणायाम और बुनियादी आसनों की समझ ● प्रारम्भिक स्तर के विद्यार्थियों के लिए योग गतिविधियों का आयोजन

इकाई-4 : स्वास्थ्य शिक्षा की समझ तथा विद्यालय का सन्दर्भ

● स्वास्थ्य शिक्षा की अवधारणात्मक एवं आलोचनात्मक समझ ★ व्यवहार परिवर्तन (बिहेवियर चेंज) मॉडल बनाम स्वस्थ संचार (हेल्थ कम्यूनिकेशन) मॉडल ● विद्यालय में स्वास्थ्य शिक्षा से जुड़े मुद्दों की पहचान ● पोषण तथा सन्तुलित आहार की समझ : प्रारम्भिक विद्यालय में आने वाले बच्चों के विशेष सन्दर्भ में ● संक्रामक रोगों की समझ तथा उनके रोकथाम की जानकारी ● प्रारम्भिक स्तर के विभिन्न विषयों से स्वास्थ्य शिक्षा के उदाहरणों की समझ तथा उनका सीखने की योजना में समावेश

इकाई-5 : स्वास्थ्य शिक्षा और विद्यालय

● विद्यालय का भौतिक वातावरण : शौचालय, जलस्रोत, कचरे का निपटान/प्रबन्धन ● विद्यालय में स्वच्छता तथा साफ-सफाई मानकों को सुनिश्चित किये जाने में समुदाय तथा शिक्षकों की भूमिका ● व्यक्तिगत स्वच्छता तथा साफ-सफाई : केस स्टडी से जुड़ी चर्चाओं के माध्यम से बच्चों में हाथ धोने, नहाने, नाखून काटने, साफ कपड़े पहनने जैसी आदतों के विकास के तरीकों को समझना तथा उनका प्रयोग अपने विद्यालय में करना ● विद्यालय में मिड-डे मील : आधारभूत समझ, सामग्रियों के भण्डारण, तैयारी एवं वितरण से सम्बन्धित कौशलों का विकास, मिड-डे मील से सम्बन्धित केस स्टडिज द्वारा नवाचारी प्रयोगों की समझ ● हेल्थ कार्ड तथा डिवर्मिंग पुस्तिका के उपयोग की समझ ● विद्यालय के शिक्षकों एवं बच्चों द्वारा स्वास्थ्य जागरूकता कार्यक्रमों का आयोजन

पाठ्य-पुस्तक

BR017 विद्यालय में स्वास्थ्य, योग एवं शारीरिक शिक्षा —डॉ. जी. पी. शैरी

S-6. Pedagogy of English

Unit 1. Teaching of English as a Second Language

● Principles of second language learning. ● Factors affecting second language learning : developmental, socio-economic and psychological factors. ● Teaching of English at the elementary level with reference to National Curriculum Framework-2005 and Bihar Curriculum Framework-2008. ● Understanding the Curriculum-syllabus-textbook of English in Bihar at primary level. ● Approaches for teaching of English—Behaviourist approach : Grammar Translation Method; Audio-Lingual drill ★ Structural approach ★ Communicative approach ★ Cognitive approach ★ Constructivist approach

Unit 2. Strategies of Teaching Language Skills : Listening and Speaking

● **Listening** : Sound recognition, pre-listening, while listening and post listening activities, syllable, stress, intonation and rhythm. ● **Speaking** : Reciting a poem, participating in a dialogue/conversation, greetings, asking and answering questions and conveying information. ● Tools and Techniques for assessment. ● Learning Plan : Special emphasis on Listening and Speaking. ● Learning Indicators for Listening and Speaking.

Unit 3. Strategies of Teaching Language Skills : Reading and Writing

A. Reading : Silent and loud reading, skimming and scanning, pre-reading, while reading and post reading. ★ Learning Indicators for Reading

B. Writing : Controlled and guided writing ★ Conveying information (posters, notices, descriptions of places, persons and things).

★ Persuading others (advertisements, articles). ★ Maintaining social relations (invitations, letters, etc. Writing as a process : brain-storming, mind map, drafting, evaluation, reviewing, editing, final draft. ● Free writing ★ Expressing one's feelings and thoughts e.g. diaries, emails, SMS. ● Tools and Techniques for assessment. ● Learning Plan : Special emphasis on reading and writing. ● Learning Indicators for Writing.

Unit 4. Teaching Vocabulary and Grammar in Context

● Strategies for vocabulary teaching based on different parts of speech : word association and formation, word search from a grid, bingo game, antakshari, idioms and their meanings, matching words with their meaning, scrabble, spelling games, dictation, anagrams, scrambling words, cross word puzzles. ● Approaches to grammar teaching with emphasis on grammar in context (activities illustrating this approach to be suggested).

पाठ्य-पुस्तक

BR018 Pedagogy of English (Primary Level)

—**Dr. N. R. Sharma**

S-7. गणित का शिक्षणशास्त्र-2 (प्राथमिक स्तर)

इकाई 1 : गणित शिक्षण की प्रविधियाँ एवं संसाधन

● गणित शिक्षण और रचनावाद ● गणित सिखाने का एक सम्भावित क्रम : अ-भा-चि-प्र ● औपचारिक गणित को ठोस अनुभवों से जोड़कर सिखाना ● खेल-खेल में सिखाना ● दोहराव करके सिखाना ● बच्चे एक-दूसरे से सीखते हैं ● गलतियों से सीखते हैं ● गतिविधियों से सिखाना ● गणित की पहेलियाँ ● खुला प्रश्न एवं समस्याएँ ● गणित सीखने-सिखाने के विविध संसाधन

इकाई 2 : गमित में सीखने की योजना और आकलन

● गणित में सीखने की योजना : योजना क्यों और कैसे बनाएँ ● गणित के सन्दर्भ में सीखने का आकलन : क्यों, क्या और कैसे ? ● प्राथमिक स्तर पर गणित के सन्दर्भ में सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन ● कक्षा-कक्ष में प्रयोग में लाये जाने वाली आकलन की कुछ प्रविधियाँ ● गणित में सीखने के संकेतकों की समझ

इकाई 3 : ज्यामितीय आकृतियाँ एवं पैटर्न

● आकृतियाँ : खुली व बन्द, नियमित व अनियमित ● ज्यामिति के अवयव : बिन्दु, रेखा, किरण ● रेखाखण्ड एवं कोण का प्रत्यय ● द्विविमीय आकृतियों एवं त्रिविमीय वस्तुओं की समझ ● सममित आकृतियाँ ● पैटर्न की अवधारणा

इकाई 4 : भिन्न एवं दशमलव संख्याएँ

● भिन्नात्मक संख्याओं की समझ एवं दैनिक जीवन में उपयोग ● भिन्न के विभिन्न अर्थ ● भिन्नात्मक संख्याओं पर गणितीय संक्रियाएँ ● दशमलव संख्या एवं दशमलव

भिन्न ● दशमलव संख्याओं पर संक्रियाएँ ● इबारती प्रश्न व प्रकार ● दैनिक जीवन में भिन्न एवं दशमलव भिन

पाठ्य-पुस्तक

BR019 गणित का शिक्षणशास्त्र-2 (प्राथमिक स्तर)

—डॉ. संजीव माधव शर्मा

S-8. हिन्दी का शिक्षणशास्त्र-2 (प्राथमिक स्तर)

इकाई-1 : लेखन क्षमता का विकास

● लेखन का अर्थ : संकल्पना और विकास ● शुरुआती लेखन : संकल्पना और विकास ● लेखन की चरणबद्ध प्रक्रिया : आड़ी-तिरछी रेखाएँ, प्रतीकात्मक चित्र, स्व-वर्तनी, पारम्परिक लेखन की ओर ● पढ़ना और लिखना में सम्बन्ध ● प्रारम्भिक कक्षाओं में लेखन क्षमता के विकास के तरीके : चित्र बनाना, रेखाचित्र से कहानी बनाकर लिखना, अपनी रुचि की चीजों के बारे में लिखना, कहानी को आगे बढ़ाकर लिखना, श्रुतलेख, लयात्मक शब्द से तुकबंदी करना, पत्र, कहानी, कविता आदि लिखना, विज्ञापन बनाना, विभिन्न उद्देश्यों के लिए लिखना ● लिखना सिखाने में आने वाली समस्याएँ व उनके समाधान के तरीके : क्या ये वास्तव में समस्याएँ हैं या बच्चों द्वारा सीखने की प्रक्रिया के स्वाभाविक चरण ? बच्चों के कार्य पर शिक्षकों की प्रतिक्रिया का महत्त्व और स्वरूप ● भाषा सीखने के संकेतक : लेखन के सन्दर्भ में

इकाई-2 : हिन्दी शिक्षण में सीखने की योजना और कक्षा प्रक्रियाएँ

● हिन्दी सीखने का अर्थ और इसके लिए सीखने की योजना के प्रमुख बिन्दु ● हिन्दी शिक्षण के लिए सीखने की योजना के प्रमुख प्रकार ● हिन्दी का रचनात्मक शिक्षण और कक्षा प्रक्रियाएँ ● हिन्दी शिक्षण हेतु सीखने की योजना की चुनौतियाँ

इकाई-3 : हिन्दी का व्यावहारिक व्याकरण और वर्तनी

● भाषा संरचना : वर्ण, शब्द, वाक्य ● सन्दर्भ आधारित व्याकरण ● गतिविधियाँ और व्याकरण ● अशुद्धियाँ और उनका निराकरण ● वर्तनी की अशुद्धियाँ और निराकरण

इकाई-4 : हिन्दी शिक्षण में आकलन

● हिन्दी सीखने के सन्दर्भ में आकलन का अर्थ : सीखने की प्रक्रिया के रूप में, शिक्षार्थी को सीखने में मदद करने के रूप में, शिक्षातन्त्र को प्रतिपुष्टि देने के रूप में उत्पाद तथा प्रक्रिया के रूप में ● हिन्दी भाषा में सतत और समग्र आकलन की संकल्पना ● भाषा में आकलन के विभिन्न तरीके : विभिन्न क्षमताओं का मूल्यांकन, मौखिक आकलन, अवलोकन, लिखित आकलन, प्रस्तुति, अभिनय, पोर्टफोलियो, जाँच सूची, रेटिंग स्केल आदि। ● सीखने के संकेतकों की समझ ● हिन्दी भाषा शिक्षण के आकलन में प्रश्नों की भूमिका

पाठ्य-पुस्तक

BR020 हिन्दी का शिक्षणशास्त्र-2 (प्राथमिक स्तर)

—डॉ. रामशकल पाण्डेय